1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

(कविता)

प्रतिध्वनि

"हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई में सत्य ही एकमात्र अस्त्र है।" – श्री दलाई लामा

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जीवन मूल्य : सभी प्रकार के प्रलोभनों से मुक्त रहकर ही हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं।

शब्दार्थ

उन्मुक्त	– स्वतंत्र, खुला	फुनगी	– पेड़ की शाखा का अग्र भाग
कटुक	– कड़वा	आश्रय	– सहारा
शृंखला	– बेड़ियाँ, जंजीर	आकुल	– व्याकुल
क्षितिज	– जहाँ धरती और आसमान मिलते हैं	निबौरी	– नीम का फल
कनक	– सोना	पुलकित	– आनंदित

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) पक्षी का उड़ान के प्रति लगाव बताने वाली पंक्ति लिखिए।

(ख) पक्षी स्वतंत्र होकर क्या-क्या करना चाहते हैं?

(ग) क्या सुविधाओं के लालच में हम अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं? विस्तार से समझाइए।

(घ) पिंजड़े में पक्षी को कौन-कौन सी सुविधाएँ मिलती हैं?

(ङ) पक्षियों को पिंजड़े में बंद रखने से पर्यावरण को क्या नुकसान होता है? सोचकर बताइए।

2. **कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–**

(क) नीड़ न दो .... कर डालो।

(ख) स्वर्ण- शृंखला .... सब भूले।

(ग) या तो .... की डोरी।

(घ) लाल किरण-सी .... के दाने।

Scanned with CamScanner

2

छोटा जादूगर

(भावनात्मक कहानी)

प्रतिध्वनि

"आत्मसम्मान आत्मनिर्भरता के साथ आता है।" – श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। उस छोटे-से फुहारे के पास, एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुर्ते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीरता के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी कुछ संपूर्णता थी। मैंने पूछा, "क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?"

"मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा लगा। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा ताश का खेल तो मैं दिखा सकता हूँ।" उसने बड़े जोश से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा– "और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?"

"नहीं, मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।"

मैंने कहा – "तो चलो मैं वहाँ पर तुमको ले चलूँ।" मैंने मन-ही-मन कहा– "भाई! आज के तुम ही मित्र रहे।"

उसने कहा– "वहाँ जाकर क्या कीजिएगा। चलिए निशाना लगाया जाए।"

मैंने उससे सहमत होकर कहा– "तो चलो पहले शरबत पी लिया जाए।" उसने हाँ के लिए सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, "तुम्हारे घर और कौन हैं?"

"माँ और बाबू जी।"

"उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?"

"बाबू जी जेल में हैं।"

"क्यों?"

"देश के लिए।", वह गर्व से बोला।

"और तुम्हारी माँ?"

"वह बीमार हैं।"

"और तुम तमाशा देख रहे हो?"

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा– "तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ पैसे दे दिए होते तो मुझे तसल्ली होती।"

Scanned with CamScanner

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

"हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबू जी! मेरी माँ बीमार हैं; इसलिए मैं नहीं गया।"

"कहाँ?"

"जेल में ! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना भी पेट भरूँ।"

मैंने दीर्घ नि:श्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा- "अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।"

हम दोनों उस जगह पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज़! उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया; लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिए।

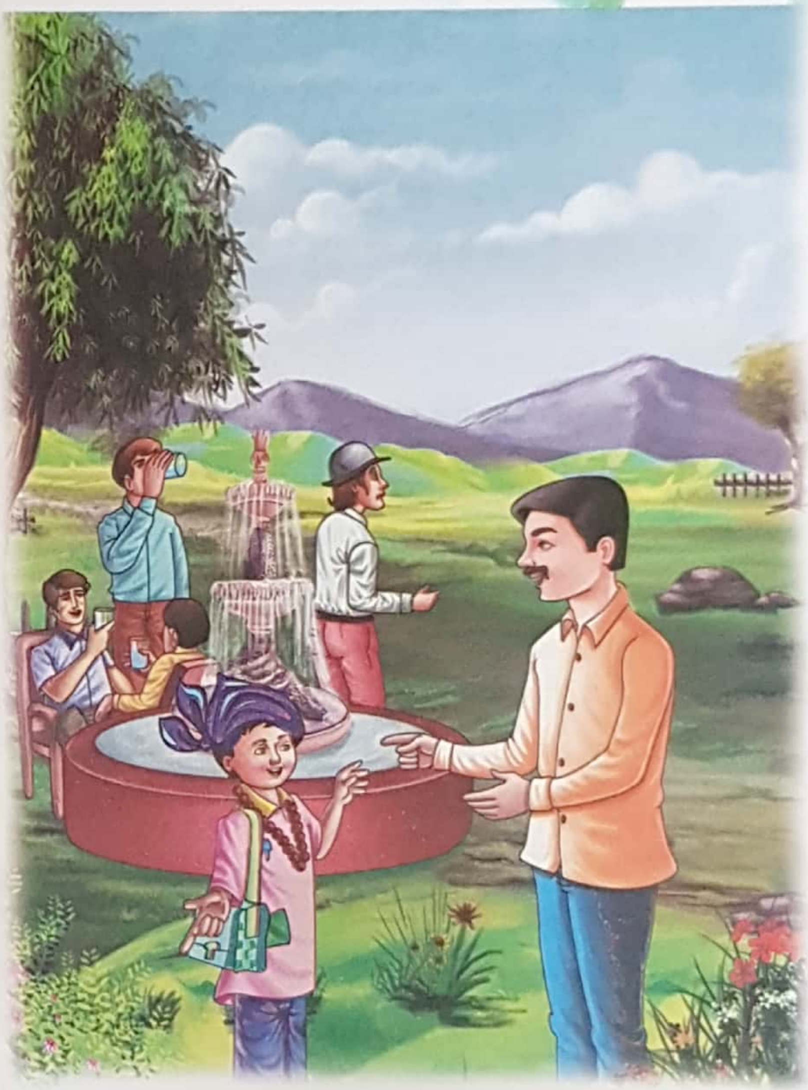

लड़के ने कहा -"बाबू जी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।"

वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैंने मन-ही-मन कहा- "इतनी जल्द आँख बदल गई।"

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा- "बाबू जी!"

मैंने पूछा - "कौन?"

"मैं हूँ, छोटा जादूगर!"

कोलकाता के सुंदर बोटनिकल-उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ़ जाँघिया और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बँधा हुआ था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा-

"बाबू जी नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ।"

"नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।"

"फिर इसके बाद गाना-बजाना होगा, बाबू जी?"

Scanned with CamScanner

"नहीं जी-तुमको ......" मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था; तभी श्रीमती जी ने कहा– "दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।" मैं चुप हो गया; क्योंकि श्रीमती जी की बोली में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरंभ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की बातों से ही खेल हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक की ज़रूरतों ने उसे जल्दी ही चतुर बना दिया। यही तो संसार है। ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए, गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। मैंने कहा– "अब हो चुका, अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।"

श्रीमती जी ने धीरे से एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा– "लड़के!"

"छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।"

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा– "अच्छा, तुम इस रुपये से क्या करोगे?"

"पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।" मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा–"ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!"

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले।

उस छोटे-से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। डूबते हुए सूर्य की अंतिम किरण पेड़ों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। चारों ओर सुनसान था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा– "तुम यहाँ कहाँ?"

"मेरी माँ यहीं हैं न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।" मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा–"माँ!" मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने ऑफ़िस में समय से पहुँचना था। कोलकाता से मन ऊब गया। फिर भी चलते-चलते एक बार उस बाग को देखने की इच्छा हुई।

साथ-ही-साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो और भी····· मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी; पर सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता नहीं थी। जब औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा– "आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?"

"माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।" अविचल भाव से उसने कहा।

"तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए!"

उसने कहा– "क्यों न आता!"

Scanned with CamScanner

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा– "जल्दी चलो।", मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में "माँ-माँ" पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था; किंतु स्त्री के मुँह से "बे······" निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर पड़े। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था; मैं भौंचक्का खड़ा था। उस साफ धूप में सारा संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नाच रहा था।

–जयशंकर प्रसाद

जीवन मूल्य : हमें कभी भी परिश्रम से संकोच नहीं करना चाहिए।

शब्दार्थ

बटोर	–	इकट्ठा	पथ्य	–	उपयुक्त आहार
रुकावट	–	बाधा	अविचल	–	स्थिर
तिरस्कार	–	बेइज़्ज़ती, अपमान	विनोद	–	मनोरंजन
कमलिनी	–	छोटा कमल	दंग	–	हैरान
हिंडोला	–	झूला	कलनाद	–	शोर

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) छोटे जादूगर के माता-पिता किस स्थिति में थे?

(ख) लेखक छोटे जादूगर पर गुस्सा क्यों हो रहा था?

(ग) छोटे जादूगर के पास जादू दिखाने के लिए क्या-क्या चीज़ें थीं?

(घ) छोटा जादूगर तमाशा क्यों दिखा रहा था?

(ङ) लेखक के अनुसार छोटा जादूगर कैसा लड़का था?

2. **सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए–**

(क) ······································ के मैदान में बिजली जगमगा रही थी।

(ख) तो चलो पहले ································· पी लिया जाए।

(ग) मेरे बाबू जी ································· में हैं।